ISSN–2277- 8721

EIIRJ Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume–XII, Issues – IV July – August 2023

OPEN ACCESS Original Research Article

सम्राट अशोक के लेखों में वर्णित तत्कालीन समाज की रूपरेखा

विवेक कुमार

शोधार्थी

बौद्ध अध्ययन विभाग,मगध विश्वविद्यालय बोधगया।

सारांश:

सम्राट अशोक वास्तव में आदर्श शासक थे जिसने मानव धर्म का वह शुद्ध स्वरूप विश्व के समक्ष प्रस्तुत किया जो सभी सम्मानित] नैतिक आदर्शों तथा सिद्धांतों का एक संग्रह मात्र है। सम्राट ने धर्म प्रचार के लिए मठों का निर्माण] धर्म विभाग की स्थापना] धर्म यात्रा की व्यवस्था] धम्र श्रावण और धर्म विजय आदि महान कार्यों के साथ-साथ] लोक हित और निरीक्षकों की नियुक्तियाँ भी की। उन्होंने अपने शासनकाल में तृतीय बौद्ध संगति का अधिवेशन किया और बौद्ध संघ में उत्पन्न होनेवाले दोषों का निराकरण किया। उन्होंने पाली और जनसधारण की भाषा में धर्म ग्रंथों के लिखवाने का महान कार्य भी सम्पन्न किया। उनकी तुलना विश्व के महानतम शासकों 'कान्सटेन्टाइन] 'मारकस*] 'ओरीलियस*] 'अकबर*] और 'फ्रेड्रिक*] महान से की जाती है किन्तु वह इन सबसे कहीं अधिक विशाल हृदय और उच्च आदर्शों के व्यक्ति थे] इसमें रचमात्र भी संदेह नहीं है।*

Copyright © 2023 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY-NC 4.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

सम्राट अशोक ने धार्मिक सहिष्णुता के क्षेत्र में भी आदर्श उपस्थित किया। वह देवों और ब्राह्मणों से किसी प्रकार का द्वेष भाव नहीं रखते थे। बारहवें शिलालेख से हमें यह भली-भाँति विदित हो सकता है कि वह सभी सम्प्रदायों वालों को चाहे वे संन्यासी हों अथवा गृहस्थ] दान-दक्षिणा देकर अनेक प्रकार से सम्मानित करते थे। वह विभिन्न सम्प्रदायों से मेल-जोल स्थापित करना चाहते थे और धार्मिक सहिष्णुता का कट्टर पक्षपाती थे] यद्यपि स्वयं उन्होंने बौद्ध धर्म की दीक्षा ले ली थी। उनका विश्वास था कि जो व्यक्ति अपने धर्म का पक्षपातपूर्ण आदर करने और अन्य धर्मों की निन्दा करते हैं वे वस्तुतः अपने धर्म को ही क्षति पहुँचाते हैं। डॉ0 हेमचन्द्र चौधरी ने लिखा है कि यद्यपि अशोक को बुद्धजी के सिद्धांतों में अटूट श्रद्धा थी] पवित्र बौद्ध तीर्थों में वह पूजा को मान्यता देते थे और बौद्ध संघ के निकट सम्पर्क में भी वह स्वयं रहा करते थे] तथापि वह अपने साम्प्रदायिक विचारों को दूसरों के सिरों पर मढ़ना कदापि उचित नहीं समझते थे। नीति और सदव्यवहार के विरूद्ध आचरण करने वाली संस्थाओं और प्रथाओं को समाप्त करने का उन्होंने महान कदम उठाया। वह लोगों को पवित्र आचरण के द्वारा 'सम्बोधि*

ISSN–2277- 8721

EIIRJ Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume–XII, Issues – IV July – August 2023

OPEN ACCESS Original Research Article

अथवा निर्वाण की आशा न दिलाकर उन्हें स्वर्ग तथा देवताओं का दर्शन लाभी पाने की पूर्ण आशा दिलाने में व्यवहारिक से सिद्धहस्त थे। उनके शिलालेखों में उत्कीर्ण शब्दावली का जो कुछ भावार्थ स्पष्ट होता है उसका कुछ अंश नीचे दिया गया है- 'सभी लोक चाहे वे छोटे हो या बड़े] किन्तु वे स्वर्ग की प्राप्ति कर सकते हैं और भगवान का साक्षात्कार कर सकते हैं। ऐसा वे भौतिक सुख के स्थान पर पराक्रम और तपश्चर्या के द्वारा अवश्य कर सकते हैं। पूर्व पुरातन नियमों का पालन] माता-पिता तथा गुरूजनों का आदर] जीवों पर दया और सत्य के आचरण से प्रत्येक श्रेणी के व्यक्ति का परम कल्याण और उसकी सद्गति उपलब्ध हो सकती है। उन्होंने अपने शिलालेखों पर उच्च कोटि का उपदेश उत्कीर्ण कराये। उनके ये उपदेश सर्वसाधारण लोगों को अत्यंत सुगमता से उपलब्ध थे- 'शिष्य को गुरू का आज्ञा पालन करना चाहिए। उसके धार्मिक सिद्धांतों में ''मस्तिष्क की शुद्धता] कृतज्ञता] दया] दान] सत्कर्म पवित्रता] सत्य पालन और इन्द्रिया निग्रह का सर्वोपरि स्थान है।**

सम्राट अशोक के धर्म के संबंध में विद्वानों में बड़ा मतभेद है। कुछ विद्वान उन्हें उपासक बौद्ध धर्म का अनुयायी बताते हैं तो कुछ विद्वान उन्हें ब्राह्मण धर्म का अनुयायी कहते हैं तो कुछ उनके धर्म को 'सार्वभौम धर्म* की संज्ञा देते हैं।

अशोक के धर्म के संबंध में विभिन्न विचार (Various views regarding he religion of Ashoka):

1) **डॉ. फ्लीट का मत** -''अशोक का धर्म नहीं था बल्कि राजधर्म था जिसमें सम्राट के कर्तव्यों का वर्णन था।**

2) **डॉ. विन्सेन्ट स्मिथ का मत** -''जिस धर्म का अशोक ने प्रचार किया उसमें बौद्ध धर्म की बहुत ही कम बातें थी और सारी ऐसी बातें शामिल थी जो दूसरे धर्मों में समान रूप से मिलती-जुलती थी।**

3) **श्री मेकफेल का मत** -''अशोक ने जिस धर्म का प्रचार अपने लेखों में किया, वह बौद्ध धर्म नहीं था] बल्कि एक ऐसा सादा धर्म था जिस पर अशोक सब धर्मों के अनुयायियों से आचरण कराना चाहते थे।**

4) **डॉ. हेमचन्द्र राय चौधरी का मत-** ''डॉ. चौधरी ने यह मत प्रतिपादित किया है कि अशोक निश्चित रूप से बौद्ध थे। वह लिखते हैं] इसमें संदेह के लिये स्थान नहीं है कि अशोक बौद्ध बन गये थे। भाब्रु शिलालेख में उन्होंने स्पष्ट रूप से स्वीकार किया है कि बौद्ध धर्म तथा संघ में उनका विश्वास था। उन्होंने बुद्ध जी के जन्म-स्थल तथा ज्ञान-प्राप्ति के स्थान की तीर्थयात्रा की थी और जन्म-स्थान पर उन्होंने पूजा की थी।

5) **डॉ. ए. के. मुकर्जी का मत**-मुकर्जी के शब्दों में] ''हमें अशोक के व्यक्तिगत और सामूहिक धर्म में अन्तर स्पष्ट करना चाहिए।**

अशोक के धर्म के विभिन्न पहलू (Various Phases of the Religion of Ashoka):

- **अशोक का व्यक्तिगत धर्म :-** अनेक साहित्यिक] धार्मिक और पुरातत्व संबंधी प्रमाणों के आधार पर हम कह सकते हैं कि अशोक का व्यक्तिगत धर्म बौद्ध धर्म ही था। इस संबंध में निम्नलिखित तर्क प्रस्तुत किये जा सकते हैं-
- **बौद्ध धर्म में आस्था :-** अशोक ने भाब्रू शिलालेख में स्पष्ट स्वीकार किया है कि बौद्ध धर्म तथा संघ में उनका विश्वास

ISSN–2277- 8721

EIIRJ Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume–XII, Issues – IV July – August 2023

OPEN ACCESS Original Research Article

था। अशोक यह कहते हैं] ''श्रीमानों आप जानते हैं कि बौद्ध धर्म तथा संघ में मैं पूर्ण आस्था और सम्मान रखता हूँ।**

- **संघ की एकता :-** सारनाथ के लघु-स्तंभ लेख में अशोक ने अपने को बौद्ध धर्म का संरक्षक घोषित करते हुए संघ में फूट डालने वालों के लिये दण्ड की घोषणा की थी। ''देवानाम् प्रिय प्रियदर्शी सम्राट** ऐसा कहते हैं कि पाटलिपुत्र में तथा प्रांतों में कोई संघ में फूट न डालें। जो कोई] चाहे वह भिक्षु हो या भिक्षु की संघ में फूट डालेगा] उसे श्वेत वस्त्र पहनाकर, उस स्थान पर रख दिया जायेगा] जो भिक्षुओं या भिक्षुणियों के लिये उपयुक्त नहीं है अर्थात् उसे संघ से निकाल दिया जायेगा। ... ''साँचा के अभिलेख में वह पुनः घोषणा करते है] ''सभी भिक्षु और भिक्षुणियों के संघ को एकाकार कर दिया गया है] और जब तक मेरे पौत्र तथा प्रपोत्र शासनारूढ़ रहेंगे तथा जब तक चाँद-सूरज चमकते रहेंगे] यह एक ही रहेगा।**
- **तीर्थयात्रा :-** अशोक के आठवें शिलालेख तथा लघु स्तम्भ लेख से ज्ञात होता है कि उन्होंने बुद्ध के जन्म-स्थान 'लुम्बिनी वन' तथा ज्ञान प्राप्त होने वाले स्थान 'बोधगया* की यात्रायें की थीं।
- **बौद्ध धर्म में दीक्षा :-** ह्वेनसांग तथा इत्सिंग भी उनका बौद्ध धर्म में दीक्षित होना स्वीकार करते हैं। इत्सिंग ने तो भिक्षु वेश में अशोक की एक मूर्ति भी देखी थी। 'दीपवंश* तथा 'महावंश* आदि बौद्ध ग्रंथों में अशोक का एक 'बालपंडित* द्वारा बौद्ध धर्म में दीक्षित होने का उल्लेख आता है। इसीलिये अशोक ने अपने साम्राज्य में पशु] बलि] यज्ञ तथा अनुष्ठनों का भी निषेध कर दिया था।
- **स्तूपों का निर्माण :-** अशोक ने लगभग 80 हजार स्तूपों का निर्माण कराया था। बौद्ध अनुश्रुतियों से ज्ञात होता है कि उन्होंने आठ स्तूपों में सुरक्षित महात्मा गौतम बुद्ध के अवशेषों को वितरित करके स्वनिर्मित अगिणत स्तूपों में रखवाया था।
- **बौद्ध धर्म का प्रचार :-** बौद्ध धर्म के प्रचारार्थ उन्होंने अपने भिक्षु और भिक्षुणियों को देश-विदेश में भेजा था। उनका पुत्र महेन्द्र और पुत्री संघमित्रा बौद्ध धर्म का प्रचार करने लंका गए थे।
- **बौद्ध संगीति का आयोजन :-** ब्राह्मण ग्रंथ 'गार्गी संहिता* में भी अशोक के बौद्ध होने का उल्लेख है। अशोक के बौद्ध होने का सबसे बड़ा प्रमाण यह है कि उन्होंने मोग्गलि पुत्र तिष्य के सभापतित्व में तृतीय बौद्ध संगीति का आयोजन किया था जिसका उद्देश्य महात्मा बुद्ध के उपदेशों का प्रामाणिक संकलन करना था।
- **अशोक का सर्वसाधारण के लिए धर्म :-** ''अशोक की उदारता इतनी सार्वभौमिक थी कि उन्होंने कभी अपने व्यक्तिगत धार्मिक विचार प्रजा पर लादने का प्रयत्न नहीं किया। ... जिस 'धर्म* का रूप उन्होंने संसार के सामने रखा वह प्रमाणतः सारे धर्मों का सार है।** वस्तुतः ''धर्म के जिस स्वरूप पर उन्होंने जोर दिया, वह किसी धार्मिक सिद्धांत की अपेक्षा सदाचार के नियमों का संग्रह है।** यहाँ यह स्मरणीय है कि ''उन्होंने लेखों में कहीं चार आर्य सत्यों* अष्टांगिक मार्ग तथा निर्वाण का उल्लेख नहीं है। उन्होंने तो ऐसे नैतिक सिद्धान्तों का प्रचार किया जिन्हें प्रत्येक जाति] धर्म तथा देश का व्यक्ति मान सकता था।** संक्षेपतः उन्होंने निम्नलिखित

ISSN–2277- 8721

EIIRJ Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume–XII, Issues – IV July – August 2023

OPEN ACCESS Original Research Article

आचरणों के पालन पर विशेष बल दिया था-

- माता-पिता, गुरूजनों और वृद्धों की सेवा करनी चाहिये और उनके प्रति आदर-सम्मान तथा श्रद्धा रखनी चाहिये।
- दासों] भूत्यों तथा वेतन-भोगी सेवकों के साथ उचित व्यवहार करना चाहिए।
- समस्त प्राणियों के प्रति आदर तथा दया का भाव रखना चाहिए। अहिंसा व्रत का पालन करना चाहिए।
- मनुष्य को अपनी भावनाओं को शुद्ध और पवित्र रखना चाहिए] अपनी इंद्रियों पर पूर्ण अधिकार रखना चाहिए तथा सत्य का आचरण करना चाहिए। दया] दान] कृतज्ञता आदि सद्गुणों का विकास करना चाहिए। थोड़ा व्यय और थोड़ा संग्रह करना चाहिए। उग्रता] निष्ठुरता] क्रोध] अहंकार] ईर्ष्या आदि दुर्गुणों का तिरस्कार करना चाहिए। मनुष्य को धार्मिक भावना के विकास तथा आत्मोकर्ष के हेतु समय-समय पर आत्म-निरीक्षण करते रहना चाहिए।

अशोक के धर्म की विषेषतायें (General Characteristics of Ashoka's Religion):

उपर्युक्त आदर्शों के विश्लेषण करने पर अशोक धर्म में निम्नलिखित विशेषतायें प्रकट होती है-

- **सार्वभौमिकता :-** अशोक का धर्म सार्वभौम था। उनमें विश्व के सभी धर्मों के अच्छे-अच्छे गुण समाविष्ट किए गए थे। साम्प्रदायिकता अथवा संकीर्णता उनके नाम में न थी। वस्तुतः ''उसमें वे समस्त शिक्षायें और उपदेश थे जो सभी धर्मों में साधारण रूप से सर्वमान्य है।** इस प्रकार ''कर्त्तव्य की नितांत असंकुचित व्याख्या तथा सार्वभौमिक धर्म के सर्वप्रथम निरूपण का श्रेय अशोक को ही देना होगा।**
- **सहिष्णुता :-** अशोक के धर्म की दूसरे विशेषता थी। स्वयं सम्राट सभी धर्मों को आदर तथा श्रद्धा की दृष्टि से देखते थे। उनके धर्म में किसी धर्म से ईर्ष्या या द्वेष रखने की आज्ञा नहीं थी। ''वह ईश्वर के पितृत्व और मानव के मातृत्व में विश्वास करते थे।** अपने द्वादेश शिलालेख में अशोक कहते हैं कि ''मैं सब धर्मों का मान करता हूँ और सबको दान देता हूँ] परन्तु सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि सबमें धर्म बढ़े। कोई भी व्यक्ति दूसरे धर्मों का अपमान न करे और सब एक दूसरे के सम्प्रदायों का मान करें। ऐसा आचरण कर व्यक्ति अपने सम्प्रदाय का विकास करता है और दूसरे समप्रदायों को भी लाभ पहुँचाता है इसके विरूद्ध आचरण से वह अपने सम्प्रदाय की क्षति तो करता ही है, दूसरे सम्प्रदायों का भी वह अनिष्ट करता है। अतः सहिष्णुता ही प्रशंसनीय है, इस अर्थ में कि सभी दूसरों के सिद्धांत सुनें और सुनने को तत्पर रहें।
- **मूल धार्मिक तत्त्वों पर बल :-** अशोक के धर्म में बाह्य आडम्बरों की अपेक्षा मूल धार्मिक तत्त्वों पर ही बल दिया गया था। उसमें बाह्य त्रिया विधियों और दार्शनिक सिद्धान्तों को निस्सार माना गया था। द्वादश शिलालेख में अशोक घोषणा करते हैं] ''देवताओं के प्रिय की यह इच्छा है कि सारे सम्प्रदाय वृहत ज्ञान प्राप्त करें और सुन्दर सिद्धांत सीखें। देवताओं के प्रिय दान अथवा बाह्य गौरव को इतना श्रेय नहीं देते जितना सब सम्प्रदायों के आधारभूत तत्त्व के विकास और प्रसार को।**

ISSN–2277- 8721

EIIRJ Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume–XII, Issues – IV July – August 2023

OPEN ACCESS Original Research Article

- **नैतिकता तथा पवित्र सदाचार की प्रधानता :-** ''अशोक के विचारानुसार वास्तविक धर्म मंगल जीवन के उचित आचरण में था।** उन्होंने श्रेष्ठ नैतिकता और पवित्र सदाचार पर विशेष बल दिया था।** उन्होंने जनता से अपनी भावनाओं को नियंत्रित करने] अपने भीतरी विचारों में जीवन और आचरण को पवित्र बनाने को कहा था।**
- **अन्य धर्मों के लिए स्थान :-** अशोक के धर्म की विशेषता थी कि विभिन्न धर्मावलम्बी अपना-अपना धार्मिक विश्वास रखते हुए भी उनके धर्म को मान सकते थे। अशोक का धर्म अन्य धर्मों के आड़े नहीं आता था।
- धर्म प्रचार के उपाय (**Measures adopted for the spread of Buddism**) -
- अशोक ने पूर्ण धार्मिक निष्ठा से अपने धर्म प्रचार के लिये सफल उपयोग किया था। उनके सुप्रयासों का ही परिणाम था कि गंगा की घाटी तक सीमित बौद्धधर्म के रूप में परिणत हो गया। बौद्धधर्म के प्रचार के लिए अशोक ने निम्नलिखित प्रयास किये थे-
- **सम्राट द्वारा धर्मपालन :-** अशोक कोरे उपेदशों अथवा सिद्धांतों में विश्वास नहीं करते थे] अपितु उन्हें व्यावहारिक रूप भी प्रदान था। सबसे पहले उन्होंने स्वयं अपने चरित्र को अपने सिद्धांतों के अनुकूल ढाला और अपने को संसार के सामने आदर्श रूप रखा।** एक सच्चे बौद्ध भिक्षु की तरह उन्होंने त्यागमय जीवन बिताना आरंभ कर दिया। उन्होंने आखेट खेलना और मांस भक्षण करना छोड़ दिया और एक सच्चे बौद्ध मतावलम्बी की भाँति धर्म तथा संघ की सेवा में लग गया। सम्राट के पवित्र] त्यागमय तथा धर्मपरायण जीवन का जनसाधारण पर विशेष प्रभाव पड़ा और अधिक संख्या में लोग बौद्धधर्म की ओर आकृष्ट होने लगे।
- **धर्मयात्रा :-** धर्म प्रचार के लिये अशोक ने धर्म श्रावण की व्यवस्था की थी। इनमें धार्मिक विषयों पर सम्राट संदेश देते थे] धार्मिक प्रवचन आदि करते थे। इसमें राज्य के कई अधिकारी जैसे राजुक] प्रादेशिक] युक्त आदि भी सम्मिलित होते थे।
- **धर्म विभाग की स्थापना :-** धर्म प्रचार के लिये अशोक का सबसे ठोस कार्य धर्म विभाग की स्थापना करना था। इस विभाग के प्रधान अधिकारी 'धर्म महामात्र' थे। धर्म महामवों के साथ स्त्री] महामात्र] ब्रज भूमिक तथा अन्य राजकर्मचारीगण भी होते थे। 'उनका मुख्य कार्य था धर्म की स्थापना तथा वृद्धि करना और धर्म का आचरण करने वालों को सुखी बनाने का प्रयत्न करना** धर्म प्रचार के अतिरिक्त यह देखना भी महामात्रों को कर्त्तत्व था कि शासन में किसी पर कठोरता नहीं] कोई व्यर्थ बन्दी न बनाया जाय तथा किसी की व्यर्थ हत्या न हो।
- **धार्मिक प्रदर्षन :-** धर्म विभाग की देख-रेख में अशोक धार्मिक दृश्यों के प्रदर्शन की व्यवस्था करते थे। इनमें प्रायः स्वर्गलोक के दृश्य दिखलाये जाते थे जिससे जनता को प्रेरणा मिलती थी कि धर्म मार्ग पर चलकर स्वभाविक सुख प्राप्त किया जा सकता है।
- **मठों का निर्माण :-** अशोक ने अपने साम्राज्य के विभिन्न भागों में अनेक मठों का निर्माण कराया तथा पुराने व नये मठों को आर्थिक सहायता भी प्रदान की। इन मठों में बहुत बड़ी संख्या में भिक्षु और भिक्षुणियों निवास करते थे जो

ISSN–2277- 8721

EIIRJ Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume–XII, Issues – IV July – August 2023

OPEN ACCESS Original Research Article

नियमित रूप में धर्म प्रचार किया करते थे।

- **बौद्ध धर्म को राजधर्म बनाना :-** बौद्ध धर्म के हित में अशोक का सबसे महत्वपूर्ण कार्य इसे राजधर्म घोषित करना था। इसका परिणाम यह हुआ कि अनेकों लोगों में बौद्ध धर्म दुरतगति से फैला। किन्तु यहाँ यह जान लेना आवश्यक है कि अशोक ने अपने किसी प्रजाजन को कभी भी बौद्ध स्वीकार करने के लिए बाध्य नहीं किया।
- **धर्म मंगल की व्यवस्था :-** अशोक ने धार्मिक तथा सामाजिक आडम्बरों को समाप्त करके धर्म के वास्तविक रूप को जनता के समक्ष रखने का प्रयास किया। इसके लिए उन्होंने बहुत से अनुचित अनुष्ठानों] यज्ञों तथा उत्सवों को निषेध कर दिया क्योंकि उसके ''विचारानुसार वास्तविक धर्म मंगल जीवन के उचित आचरण में था।** अतः सम्राट ने सात आचरण पर बल दिया। इन सबका प्रभाव बौद्ध धर्म के प्रचार के पक्ष में पड़ना स्वाभाविक था।
- **दान व्यवस्था :-** अशोक ने रूग्णों] दीन-दुखियों] अपंगों निस्सहायों] धार्मिक संस्थाओं आदि के लिए दान की व्यवस्था की थी। वह स्वयं तो दान देते ही थे, अपने परिवार के सदस्यों तथा संबंधियों से भी दान दिलवाते थे। अशोक की नीति से धर्म-प्रचार में बड़ी सहायता मिलती थी और जनता भी प्रभावित होती थी।
- **धर्म लिपि की व्यवस्था :-** अशोक ने बौद्ध धर्म को सर्वसाधारण तक पहुँचाने तथा उसे स्थायित्व प्रदान करने के लिये धर्म के सिद्धांतों] उपदेशों तथा शिलालेखों पर जन-साधारण की भाषा में अंकित कराया। ये अभिलेख प्रचार में बड़े उपयोगी सिद्ध हुए क्योंकि इन्हें हर कोई पढ़ और समझ सकता था तथा इन्हें जीवन में अपना सकता था।
- **पषुबध निषेध :-** बौद्ध धर्म के मूल सिद्धांत 'अहिंसा* पर अधिक से अधिक बल देकर अशोक ने धर्म के प्रचार में बड़ा योगदान दिया था। उन्होंने पशु-बध को निषिद्ध ठहराया। ऐसे यज्ञों पर प्रतिबंध लगा दिया गया जिनमें पशु बलि दी जाती थी। विविध प्रकार की हिंसाओं को निषेध करने से लोगों में धर्म की प्रवृति जागृत हुई।

अशोक सम्राट के महत्वपूर्ण कार्य :-

धम्म अभिलेख और स्तंभ अभिलेख :- सम्राट अशोक के धम्म प्रचार की शैली बहुत विशिष्ट रही। उन्होंने धम्म प्रसार का महान कार्य पत्थरों के माध्यम से किया। उन्होंने पत्थरों के स्तंभ] शिलालेख] चैत्य] स्तूप आदि बनवा कर इतिहास में अपना नाम अमर किया। सम्राट अशोक के धम्म-अभिलेख भारत के एक कोने से दूसरे कोने तक पाए जाते हैं। अभी तक 50 धम्म अभिलेखों की खोज हो चुकी है। इन धम्म-अभिलेखों का वर्णन इस प्रकार किया गया है :-

1- शिलालेख 2- स्तंभलेख 3- गुहालेख

- **प्रथम स्तंभलेख :-** ''राज्यभिषेक के 26 वर्ष बाद मैंने यह धर्मलेख लिखवाया। एकांत धर्मानुराग] विशेष स्व-परीक्षा] बड़ी शुश्रषा] बड़े भाव और महान उत्साह के बिना ऐहिक और पारलौकिक दोनों उद्देश्य दुर्लभ है। पर मेरी शिक्षा से लोगों का धर्म के प्रति आदर और अनुराग दिन-प्रतिदिन बड़ा है और आगे बढ़ेगा। मेरे पुरूष चाहे उच्च पद पर हो या निम्न पद पर अथवा माध्यम पद पर] मेरी शिक्षा के अनुसार काम करते है और ऐसे उपाय करते है कि चंचमथि लोग भी धर्म का आचरण करे। इसी तरह अंतमहामात्र भी आचरण करते

ISSN–2277- 8721

EIIRJ Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume–XII, Issues – IV July – August 2023

OPEN ACCESS Original Research Article

है। धर्म के अनुसार पालन करना] धर्म के अनुसार सुःख देना और धर्म के अनुसार रक्षा करना यही धर्म है।**

- **द्वितीय स्तंभलेख :-** ‘‘धम्म है साधुता बहुत से कल्याणकारी अच्छे कार्य करना] पापरहित होना] मृदता] दूसरों के प्रति व्यवहार में मधुरता] दया-दान तथा शुचिता] आगे कहा गया है कि] ‘‘प्राणियों का वध न करना] जीवहिंसा न करना] माता-पिता तथा बड़ों की आज्ञा का पालन करना] गुरूजनों के प्रति आदर] मित्रा] परिचितों] सम्बन्धियों] श्रवणों के प्रति दानशीलता तथा उचित व्यवहार और सेवक तथा भृत्यों के प्रति व्यवहार। ब्रह्मगिरि शिलालेख में इन गुणों के अतिरिक्त शिष्यों द्वारा गुरू का आदर भी धम्म के अन्तर्गत माना गया है।** उनका स्तंभलेखों* धम्मलेखों को लिखवाने का उद्देश्य बौद्ध धम्म का अधिक से अधिक विकास करना था।

- **पषु-पक्षियों की बलि पर रोक :-** अशोक सम्राट ने पशु-पक्षियों की बलि पर रोक लगवाई] न पशु-पक्षी मार कर उनका हवन किया जाए] न उनकी बलि दी जाए और न ऐसे उत्सव मनाए जाए जो आदमी की इन्द्रिय-लोलुप बनाए] सम्राट ने अपनी रसोई में पशु-पक्षी मारने की जल्दी बंद करने का आश्वासन दिया।

  अर्थात् किसी जीव को मार कर हवन नहीं किया जाना चाहिए। सम्राट अशोक का यह कार्य सबसे महान माना गया है।

- **पषु-पक्षियों के लिए चिकित्सालय :-** अशोक सम्राट ने पशु-पक्षियों के लिए चिकित्सालयों का निर्माण कराया। उनमें उपयोगी औषधियां मंगवाई जाती थी। उन्होंने उस समय पशु-पक्षियों के लिए चिकित्सालय बनवाये थे, उनसे बड़ा कोई राजा नहीं हुआ जिन्होंने पशुओं के बारे में इतना सोचा होगा।

- **सड़कों पर वृक्ष और कुएं खुदवाए :-** अशोक सम्राट ऐसे पहले राजा हुए है जिन्होंने राज्य मार्ग पर फलदार वृक्ष लगवाए ताकि जो यात्रा कर रहे लोग और काम करने वाले खा सके और वृक्ष के नीचे बैठ कर आराम कर सके। इसके साथ-साथ उन्होंने राज्यमार्ग पर जगह-जगह पर कुए खुदवाए। यह सब कुछ उन्होंने आम जनता के लिए किया ताकि उन्हें कोई कष्ट न हो।

- **धर्मषालाओं का निर्माण :-** वो पहले सम्राट थे] जिन्होंने ये किया था। उन्होंने धर्मशालाओं का निर्माण करवाया। यह धर्मशालाएं सम्राट जी की देन हैं। उन्होंने इनका निर्माण आम जनता को ध्यान में रख कर किया ताकि यात्रा करने वालो की कोई असुविधा न हो। सम्राट अशोक ऐसे पहले राजा हैं जिन्होंने अपने से ज्यादा प्रजा के बारे में सोचा।

- **पत्थरों की जुबान देने वाले :-** सम्राट जी ने लकड़ी] बांस] ईट] धातु तथा मिट्टी का प्रयोग न करके विशाल शिल्प के लिए सर्वश्रेष्ठ साम्रगी के रूप में पत्थरों का उपयोग एवं चटानों में नक्शकारी करानी प्रारम्भ की। मौर्य स्तम्भ इसी साम्रगी से बने हैं। उन्होंने केवल बौद्ध प्रतीकों सिंह] वृषभ] हाथी] घोड़ों] धम्मचक्र को उकेरा बल्कि अपने धम्म के वचनों को भी धम्मलिपि में खुदवाया। इस तरह सम्राट ने अपने समय में पत्थरों को जुबान दी।

- **धम्मलिपि की भाषा आज की राष्ट्रभाषा :-** उन्होंने धम्मलिपि को उस समय की जन भाषा में लिखवाया। उस

ISSN–2277- 8721

EIIRJ Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume–XII, Issues – IV July – August 2023

OPEN ACCESS Original Research Article

समय की जन भाषा ब्राह्मी लिपि है। जो आज हमारी राष्ट्रलिपि देवनागरी है। अशोक जी की इच्छा थी कि इन धम्म अभिलेखों को अधिक से अधिक लोग पढ़े और अपने जीवन में इन पर अंकित बातों का अनुशीलन करे। इसलिए उन्होंने अपने साम्राज्य में जनलिपि को ही माध्यम बनाया।

- **राष्ट्रीय चिन्ह अशोक सम्राट की देन :-** सम्राट अशोक की भारत के राष्ट्रीय चरित्र पर धम्म प्रचार की स्पष्ट रूप से अमिट छाप अंकित कर दी है। आज भी भारत में राष्ट्रीय ध्वज एवं राजमुद्रा आदि पर सम्राट अशोक की उपस्थिति से यह तथ्य स्वयं ही सिद्ध हो जाता है। इसी तरह 24 आरे वाले चक्र को हम धम्म चक्र और सरकारी भाषा में अशोक चक्र कहते हैं। यह चक्र एक गाड़ी का पहिया है] गाड़ी तब आगे बढ़ती है, जब चक्र का ऊपरी भाग निचली और तथा नीचे का भाग ऊपर की और जाता है। इसी के साथ कुछ दूरी तय हो जाती है] इसी कारण विकास का प्रतीक भी माना जाता है। उन्होंने गर्जना करते चार शेरों की प्रतिमा भी स्थापित करवाई] इसे भी आज भारत का राष्ट्रचिन्ह माना जाता है। इस पर भी एक कथा है कि बौद्ध धम्म से शेरों को बुद्ध का प्रयास माना गया है। भगवान के पर्यायवाची शब्दों में शाक्य सिंह और नरसिंह का द्योतक माना गया है। यही कारण है कि सम्राट अशोक ने शेर को अपने राज्य चिन्ह के रूप में चुना। इस तरह आज सम्राट जी के चिन्हों को हमारे राष्ट्रीय चिन्हों के रूप में माना जाता है।
- **पाली भाषा का प्रयोग :-** अशोक ने अपने धर्म के सिद्धांतों का प्रचार जनसाधारण की बोलचाल की भाषा पाली में किया] अतः लोग उसकी बातों को आसानी से समझ लेते थे।
- **बौद्ध संघ में एकता के प्रयत्न तथा तृतीय बौद्ध संगीति :-** अशोक ने संघ में उत्पन्न फूट को दूर करने के प्रयत्न भी किये उन्होंने ऐसे आदेश जारी किये जिनमें फूट डालने वालों के लिये दण्ड की व्यवस्था की गई थी। इस संबंध में उसने साँची, सारनाथ और प्रयाग के स्तम्भों पर अपने आदेश अंकित कराये थे। यही नहीं उसमें बौद्ध धर्म में उत्पन्न मतभेदों को दूर करने के लिए मोग्गलिपुत्र तिष्य की अध्यक्षता में राजधानी पाटलिपुत्र में तृतीय बौद्ध सम्मेलन का आयोजन किया था सम्मेलन में बौद्ध ग्रन्थों का संशोधन किया गया] बौद्ध संघ में आये दोषों का निराकरण किया गया तथा विभिन्न बौद्ध सम्प्रदायों में एकता स्थापित करने का प्रयास भी किया गया। अशोक के अनेक प्रयत्नों के परिणामस्वरूप बौद्ध धर्म को नव-जीवन प्राप्त हुआ और अधिक से अधिक लोग इस धर्म की ओर आकृष्ट होने लगे।
- **विदेषों में धर्म प्रचारक भेजना :-** अशोक ने भारत ही नहीं अपितु भारत की सीमाओं के बाहर विदेशों में अपने धर्म का प्रचार करने का प्रयत्न किया था। उसने अनेकों प्रचार मण्डलियाँ विदेशों को भेजी थी। स्वयं अपने पुत्र महेन्द्र और पुत्री संघमित्रा को उसने लंका भेजा था। अशोक के इन सदप्रयत्नों का परिणाम यह हुआ कि भारत से बाहर लंका] वर्मा] सीरिया] मिस्र] चीन] जापान] कोरिया आदि अनेक देशों में बौद्ध धर्म फैल गया। इस संबंध में इतिहासकार स्मिथ लिखते हैं] ‘‘अशोक द्वारा धर्म प्रचारकों को भेजा जाना मानव इतिहास में एक महत्त्वपूर्ण घटना है। अशोक से पहले लगभग ढाई सौ वर्ष बौद्ध धर्म गंगा की घाटों तक ही सीमित

ISSN–2277- 8721

EIIRJ Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume–XII, Issues – IV July – August 2023

OPEN ACCESS Original Research Article

रहा और उसकी हैसियत हिन्दू धर्म के एक सम्प्रदाय की ही रही। इस स्थानीय सम्प्रदाय को विश्व धर्म में परिवर्तित करना अशोक का ही कार्य था।**

निष्कर्ष :-

अतः इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि अशोक ने बौद्ध धर्म को अपनाकर तथा उसे सक्रिय सहयोग देकर प्लेटों के उस आदर्श को पूरा कर दिखाया जिनमें 'शासक दार्शनिक और दार्शनिक शासक होने चाहिए।* एच0 जी0 रालिंसन लिखते हैं, ''बहुधा अशोक की तुलना मार्क्स ओरेलियस** सेंट पाल और कोन्स्टेंटाइन से की जाती है] किन्तु किसी भी ईसाई सम्राट ने ईसा मसीह द्वारा पहाड़ पर दिये उपदेशों को एक बड़े साम्राज्य का आधार नहीं बनाया। अतः अंततः हम कह सकते हैं कि सम्राट अशोक ने लेखों के माध्यम से समाज की एक रूपरेखा तैयार की जो आज भी स्मरणीय है।

संदर्भ सूची:

1- अशोक का चतुर्थ शिलाभिलेख पं. 9-11 ¼कालसीपाठ)

2- दिव्यावदान पृ0 323@25-26] 328@29

3- बेबर] ब्रजसूची 10@13-14 दिव्या पृ0 324-325

4- बौद्ध भिक्षु-संघ का प्रवेश विधि के संबंध में बुद्ध धर्म आणि संघ पृष्ठ 56-60 तथा 'बौद्ध संधाया परिचय* पृष्ठ-17-19।

Cite This Article:

** **विवेक कुमार** (2023). सम्राट अशोक के लेखों में वर्णित तत्कालीन समाज की रूपरेखा, **Electronic International Interdisciplinary Research Journal**, XII, Issues – IV, July -August, 2023, **123-131.***